

# डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 5, कैथेरिज्म के पाषंड को संबोधित करते

हुए © 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 5 है, कैथेरिज्म के पाषंड को संबोधित करना।

इस बार हमारा उपदेश कैथेरिज्म के पाषंड को संबोधित करने पर है।

सबसे पहले, मैं 1 कुरिन्थियों 1 की आयत 18 से 20 पर विचार करना चाहूँगा। पहली शताब्दी ई. के मध्य में कुरिन्थ के चर्च को संबोधित करते हुए, पॉल को एक ऐसी मण्डली को उपदेश देने की चुनौती का सामना करना पड़ा जो विश्वास को घमंडी तर्क के साथ भ्रमित करके खंडित हो गई थी। कुछ शुरुआती ईसाई यह मानने लगे थे कि मानवीय बुद्धि ही मोक्ष की ओर जाने वाला मार्ग है।

शास्त्र के इस अंश में, पॉल ने आरंभिक ईसाइयों को इस धारणा को अस्वीकार करने की चुनौती दी है कि मानवीय बुद्धि की प्राप्ति व्यक्तिगत उद्धार लाएगी। उस दृष्टिकोण के विपरीत, पॉल ने उन्हें उद्धार प्राप्त करने के साधन के रूप में क्रूस पर यीशु की मृत्यु में प्रकट ईश्वर की बुद्धि को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। एक ओर, मानवीय बुद्धि को मानवता द्वारा एक स्मार्ट विकल्प और व्यक्तिगत उद्धार के साधन के रूप में देखा जाता है, जबकि ईश्वरीय बुद्धि, क्रूस और पीड़ा की बुद्धि, मानवीय दृष्टि में मूर्खतापूर्ण प्रतीत होती है, क्योंकि यह कमजोरी और भेद्यता को उसी साधन के रूप में स्वीकार करती है जिसके द्वारा ईश्वर मानवता को उद्धार प्रदान करता है।

जो लोग मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में मानवीय ज्ञान पर जोर देते हैं, वे इस धारणा पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि दिव्य ज्ञान की बौद्धिक महारत के माध्यम से, वे मोक्ष तक पहुँच सकते हैं, जबकि जो लोग क्रूस को गले लगाते हैं, वे पाते हैं कि मृत्यु पर मसीह की जीत और ईश्वर के बारे में उनके द्वारा प्रकट की गई कृपा पर भरोसा ही मोक्ष का एकमात्र साधन है। ईसाई धर्म की पहली पीढ़ी के आरंभ में, पॉल के समय में, कुछ ईसाइयों ने मोक्ष की ओर एक साधन के रूप में ईश्वर के बारे में ज्ञान की व्यक्तिगत प्राप्ति पर जोर दिया, इस प्रकार प्रारंभिक चर्च में ज्ञानवाद का पाखंड पैदा हुआ। इस विश्वास प्रणाली की संरचना द्वैतवाद की अवधारणा पर बनी थी, कि पुराने नियम का ईश्वर एक पतित और बहुत दोषपूर्ण दुनिया का ईश्वर था, जो दुनिया और उसके निवासियों के प्रति क्रोध और निंदा से भरा था, जबकि नए नियम का ईश्वर दिव्य धार्मिकता और मोक्ष का ईश्वर था।

द्वैतवाद मानता है कि भौतिक दुनिया, अपनी सभी खामियों के साथ, पापपूर्ण, निंदनीय और अपूरणीय है, जबकि आध्यात्मिक दुनिया, जो भौतिक दुनिया से पूरी तरह से अलग है, ईश्वर के ज्ञान और बुद्धि के अधिग्रहण के माध्यम से आध्यात्मिक रूप से प्राप्त करने योग्य है। गूढ़ विश्वासियों द्वारा भौतिक हर चीज को अस्वीकार कर दिया गया था, जबकि आध्यात्मिक क्षेत्र के

बारे में ज्ञान पर केंद्रित जीवन मोक्ष का सच्चा साधन था। लेकिन अगर कोई द्वैतवादी मानसिकता में विश्वास करता है कि भौतिक क्षेत्र पापपूर्ण है और केवल आध्यात्मिक क्षेत्र ही मोक्ष का साधन है, तो कोई कैसे इस बात से सहमत हो सकता है कि यीशु मसीह एक जीवित, सांस लेने वाला इंसान था? यह विश्वास प्रणाली यीशु मसीह के रूढ़िवादी सिद्धांत के लिए असंगत समस्याएं पैदा करती है कि वह पूरी तरह से मानव और पूरी तरह से दिव्य दोनों है।

आस्था के द्वैतवादी ढांचे का समर्थन करने के लिए, गूढ़ज्ञानवाद का मानना है कि यीशु केवल मानव प्रतीत हुए और उन्होंने वास्तव में क्रूस पर पीड़ा नहीं झेली। गूढ़ज्ञानवादियों का मानना है कि यीशु में, ईश्वर अपनी शिक्षाओं और अपने जीवन के माध्यम से मानवता को ज्ञान का दिव्य उपहार देते हैं। गूढ़ज्ञानवादी विश्वास के अनुसार, क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, इसलिए ईश्वर संभवतः पीड़ित और मर सकता है और फिर भी ईश्वर हो सकता है।

यीशु की पीड़ा को अस्वीकार करने से मानवता और सृष्टि के बारे में एक विकृत दृष्टिकोण बना, जिसके तहत सृष्टि और मानवता दोनों को ही अस्वीकार किए जाने और पार किए जाने योग्य माना गया। चूंकि मोक्ष केवल आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता था, इसलिए इस निर्माण ने उन सभी मानवता की निंदा करना आसान बना दिया जो ज्ञानवाद के दिव्य ज्ञान को सीखने के लिए तैयार नहीं थे। ज्ञानवाद में, स्वर्ग का द्वार बहुत संकीर्ण था और केवल एक आस्तिक के दिमाग और ज्ञान के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता था।

ईसा मसीह में प्रकट ईश्वर की कृपा पर आधारित और मानवता को मुफ्त में दिए जाने वाला विश्वास गूढ़ज्ञानवादी विश्वास प्रणाली से पूरी तरह से अनुपस्थित था। प्रारंभिक मध्ययुगीन युग में बीजान्टिन साम्राज्य के पूर्वी यूरोपीय क्षेत्र में गूढ़ज्ञानवादी विश्वासों में रुचि का नवीनीकरण देखा गया, जिसे बोगोमिलिज्म नामक आंदोलन कहा जाता है। प्रारंभिक बोगोमिल्स गूढ़ज्ञानवाद में प्राचीन जड़ों वाले उदारवादी द्वैतवादी थे, और तदनुसार, उनके कई विश्वास रोमन और पूर्वी रूढ़िवादी चर्च के विपरीत थे।

उन्होंने मांस की पूजा पद्धति और यूचरिस्ट के संस्कार, पुराने नियम को पवित्र शास्त्र के रूप में इस्तेमाल करने, यीशु के चमत्कारों में विश्वास, बपतिस्मा के संस्कार और कैथोलिक चर्च के पुरोहिती को अस्वीकार कर दिया। भौतिक क्षेत्र से संबंधित सभी चीजों को अस्वीकार करने के कारण, उन्होंने विवाह को भी अस्वीकार कर दिया। कैथर नेता ब्रह्मचारी थे और इस हद तक चले गए कि उन्होंने मांस, डेयरी उत्पाद और अंडे सहित सभी खाद्य पदार्थों को अस्वीकार कर दिया, जिनका जानवरों के प्रजनन से कोई लेना-देना था।

मध्ययुगीन यूरोप में गूढ़ज्ञानवाद के फिर से उभरने का पता लगाने से पहले, हमें ऐतिहासिक संदर्भ की बुनियादी समझ स्थापित करने की आवश्यकता है। 1054 में पश्चिम में रोमन कैथोलिक चर्च और पूर्व में पूर्वी रूढ़िवादी चर्च के बीच विनाशकारी विभाजन और उसके बाद रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर ग्रेगोरियन सुधारों की स्थापना ने 11वीं शताब्दी के मध्य से अंत तक चर्च और समाज में महत्वपूर्ण बदलावों में योगदान दिया। पोप ग्रेगरी ने विभिन्न सुधारों के माध्यम से रोमन चर्च को शुद्ध करने की कोशिश की, जिसमें चर्च के भीतर अधिकारियों की नियुक्ति पर सख्त नियंत्रण स्थापित करना, सिमोनी की प्रथा को अस्वीकार करना, चर्च के नियुक्त

अधिकारियों को बेचने की प्रथा और सभी नियुक्त चर्च नेताओं को ब्रह्मचारी होने की आवश्यकता शामिल थी।

पोप ग्रेगरी ने न केवल नैतिक रूप से ईमानदार चर्च अधिकारियों को किसी भी नियुक्त नेता की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो शराब पीकर, अनैतिक व्यवहार में लिप्त थे, बल्कि उन्होंने आम लोगों को पुजारियों और बिशपों को जवाबदेह ठहराने का निर्देश भी दिया। ग्रेगरी ने कैथोलिक आम लोगों को विवाहित और सिमोनियाक पुजारियों द्वारा प्रशासित संस्कारों से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित किया। ग्रेगरी का इरादा विद्रोही पादरियों पर सुधार थोपने के लिए एक हथियार के रूप में इसका इस्तेमाल करना था, लेकिन इसका इस्तेमाल करना एक खतरनाक हथियार था, क्योंकि वहाँ से, यह पुजारियों को पूरी तरह से खत्म करने की दिशा में एक लंबा कदम नहीं था, जैसा कि बाद के पोप और पेरिस के कैनन वकीलों ने महसूस किया।

वर्ष 1100 तक, समाज में, विशेष रूप से रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर, महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। 12वीं शताब्दी धार्मिक उथल-पुथल का समय था, जिसमें आम लोग धार्मिक जीवन के महान नवीनीकरण में अपना स्थान खोजने की कोशिश कर रहे थे। हालाँकि, रोमन कैथोलिक नेतृत्व ने कैथोलिक आम लोगों की अर्थ की खोज में उनकी हार्दिक ज़रूरतों को पूरा करने का एक बड़ा अवसर खो दिया और अपने निर्धारित कर्तव्यों के हिस्से के रूप में आम लोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता को संबोधित नहीं किया।

इसके बजाय, उनका मानना था कि चर्च और उसके धार्मिक बुद्धिजीवियों को एक पवित्र सत्य के रक्षक और रखवाले के रूप में बुलाया गया था, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह इतना पवित्र था कि आम लोगों के हाथों में भरोसा नहीं किया जा सकता था। इसलिए, उन्होंने इसे केवल उन लोगों के लिए ही समझने योग्य रखा जो चर्च में उचित रूप से शिक्षित और नियुक्त थे। तथ्य यह है कि चर्च के सभी धार्मिक ग्रंथ, जिसमें बाइबिल भी शामिल है, लैटिन में लिखे गए थे, जिसका मतलब था कि आबादी का 2% से भी कम हिस्सा कार्यात्मक रूप से साक्षर था।

मठ, कॉन्वेंट या विश्वविद्यालय के बाहर लगभग किसी के लिए भी शिक्षा की कमी ने आम व्यक्ति के लिए विधर्मी सिद्धांत और रूढ़िवादी विश्वास के बीच अंतर को समझना असंभव बना दिया। चर्च की इस नीति के परिणामस्वरूप कि कौन शास्त्र और चर्च का ज्ञान प्राप्त करता है, इस पर दृढ़ पकड़ बनाए रखता है, जिससे धार्मिक गोपनीयता के साथ विश्वास को छुपाया जाता है, 12वीं शताब्दी के पहले भाग तक, विधर्म के कई घुमंतू प्रचारक थे जो कई हज़ारों आम लोगों तक पहुँचने और उन्हें सोचने के नए तरीकों में बदलने में सक्षम थे। समाज के भीतर इसी समय के दौरान, सामंतवाद, संपत्ति के स्वामित्व और धन की एक आर्थिक प्रणाली, जागीरदारों के एक छोटे वर्ग द्वारा नियंत्रित की जाती थी और किसानों के एक बहुत बड़े वर्ग द्वारा बनाए रखी जाती थी, जिनके काम से संपत्ति के मालिकों को सहारा मिलता था।

यह सामाजिक और आर्थिक संरचना पूरे पश्चिमी यूरोप में अधिक संगठित हो गई। सैन्यीकृत शहर-राज्यों के विकास के साथ, पेशेवर मिलिशिया का एक नया वर्ग, जिसे शूरवीरों के रूप में जाना जाता है, उभरने लगा। उन्हें पूरे यूरोप में महलों और किलेबंद कस्बों और शहरों के व्यापक विकास के निर्माण और हथियारों से लैस करने के लिए काम पर रखा गया और प्रशिक्षित किया

गया। सुरक्षित शहरों के उदय ने कारीगरों और छोटे व्यवसाय मालिकों के एक मध्यम वर्ग का भी विकास देखा।

धनी ज़मींदार अक्सर राजकुमारों की उपाधि धारण करते थे और इन समुदायों में शासक वर्ग बन जाते थे। फ्रांस में, इन राजकुमारों ने फ्रांस के राजा के साथ राजनीतिक वफ़ादारी विकसित की और राजा के समर्थन में सेनाएँ खड़ी करके अपनी निष्ठा का समर्थन किया। वर्ष 1114 तक पश्चिम में विधर्मी द्वैतवाद की कोई रिपोर्ट नहीं थी।

11वीं शताब्दी के दौरान, बोगोमिलिज्म पूरे बीजान्टिन साम्राज्य में पूर्व की ओर फैल रहा था। 12वीं शताब्दी की शुरुआत में, बोगोमिल्स ने पश्चिमी यूरोप में मिशनरियों को भेजना शुरू कर दिया। 12वीं शताब्दी के मध्य में, फ्रांस में कैथर पुजारी, जिन्हें परफेक्टी के नाम से जाना जाता था, सभी ने बुल्गारिया और कॉन्स्टेंटिनोपल में पाए जाने वाले बोगोमिल पूजा सेवा पुस्तिकाओं के समान एक सेवा पुस्तिका साझा की।

यह सर्वमान्य है कि कैथरिज्म पश्चिमी यूरोप में तब मजबूती से जड़ जमा चुका था, जब 1143 में कोलोन शहर में एक कैथोलिक बिशप और उसके साथी पर मुकदमा चलाया गया था। कैथर 1145 की शुरुआत में ही टूलूज़ शहर के आसपास दक्षिणी फ्रांस के लैंगडॉक क्षेत्र में मौजूद थे। 1160 के दशक तक कैथरिज्म उत्तरी फ्रांस, हॉलैंड और इटली के कुछ हिस्सों में फैल चुका था।

अभिलेखों से पता चलता है कि 12वीं शताब्दी के कैथरिज्म की मानक पूजा भाषा लैटिन थी, जिसका अर्थ था कि उनके प्राथमिक श्रोता चर्च और समाज के शिक्षित अभिजात वर्ग थे। बीजान्टिन साम्राज्य के उन कैथर मिशनरियों ने कैथर अनुष्ठान का लैटिन अनुवाद अपने साथ लाया होगा, जिससे पश्चिमी यूरोप में कैथरिज्म का तेजी से प्रसार हुआ। इन मैनुअल को तब फ्रांसीसी पुजारियों और भिक्षुओं द्वारा कॉपी किया गया था जो कैथरिज्म में परिवर्तित हो गए थे।

प्रत्येक समुदाय में शिक्षित कैथर आम लोगों का कार्य अपने परिवार और सदस्यों के साथ कैथरिज्म की बुनियादी अवधारणाओं को साझा करना था। कैथरिज्म ईसाई धर्म से एक धर्म के रूप में उभरा, लेकिन ईश्वर की द्वैतवादी प्रकृति पर इसका जोर और यीशु की मानवता को नकारने ने कैथरिज्म को रूढ़िवादी ईसाई धर्म द्वारा माना जाने वाला एक धार्मिक पाखंड बना दिया। वाल्डेन्सियन और कैथोलिक चर्च के बीच के रिश्ते के विपरीत, कैथरिज्म के पास कैथोलिक धर्म से अलग अपनी लिखित सामग्री और औपचारिक संरचना थी।

इस संदर्भ में, हम कैथर्स और वाल्डेन्सियन के बीच संघर्ष को समझते हैं। 1184 से पहले, वाल्डेस का मुद्दा एक पादरी का मुद्दा था, मिशनरी गरीबी के लिए एक बहुत शक्तिशाली अंतर्ग्रहण और एक संस्थागत पादरी के अनुष्ठान कानूनी अधिकारों के बीच संघर्ष। वाल्डेस और उनके अनुयायियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने उत्साह को एक पदानुक्रम के अधिकार क्षेत्र में प्रस्तुत करें जो प्रेरितिक गरीबी या उनके पुनर्जन्म वाले मिशन की भावना के लिए उनकी उत्कट आकांक्षा को साझा नहीं करता था।

पोप ने वाल्डेस को विद्वत्तापूर्ण करार दिया, रोमन कैथोलिक चर्च ने उन्हें बहिष्कृत कर दिया और जल्द ही स्थानीय बिशप ने उन्हें ल्योन से निर्वासित कर दिया। इस निर्वासन के परिणामस्वरूप,

वाल्देस के अनुयायियों ने सुसमाचार का आदर्श वाक्य अपनाया कि उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने और सिखाने के लिए जोड़े में भेजा जाएगा। वाल्देस और उनके अनुयायियों ने रोमन मंदर चर्च के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करने और कैथरिज्म के पाखंड की अपनी मान्यता में, फ्रांस के लैंगडॉक क्षेत्र में मिशनरियों के जोड़े भेजे ताकि वे कैथरिज्म के खिलाफ प्रचार कर सकें और लोगों को रूढ़िवादी कैथोलिक धर्म और कैथर्स की विधर्मी शिक्षाओं के बीच विश्वास के अंतर के बारे में शिक्षित कर सकें।

लैंग्वेडॉक शब्द का शाब्दिक अर्थ है लोगों की भाषा, और फ्रांस के इस क्षेत्र में बोली जाने वाली आम भाषा प्रोवेन्सल थी, जो ल्योन में बोली जाने वाली क्षेत्रीय भाषा थी। 12वीं शताब्दी के अंत तक, वाल्डो के अनुयायियों, जिन्हें ल्योन के गरीब के रूप में जाना जाता था, ने इस क्षेत्र में मध्यम और किसान वर्गों के साथ काफी पैठ बना ली थी, जिसका मुख्य कारण बाइबिल और स्थानीय भाषा से ईसाई धर्म को सिखाने की उनकी क्षमता थी। उन्होंने विनम्रता और सौम्यता की भावना को भी अपनाया, जो यीशु की शिक्षाओं और जीवनशैली के एकीकरण को प्रदर्शित करता है।

वाल्डेन्सियन ने इस पद्धति का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करके कैथर्स के पाखंड की प्रकृति को लैंग्वेडॉक में आम लोगों तक पहुंचाया और कैथर्स के फैलते प्रभाव को धीमा करने में महत्वपूर्ण प्रगति की। आम लोगों के दिलों को जीतने में वाल्डेन्सियन की प्रभावशीलता के परिणामस्वरूप, 13वीं शताब्दी की शुरुआत में कैथर्स ने अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए लोगों की भाषा के उपयोग पर अधिक से अधिक भरोसा किया। ल्योन के गरीबों के अस्तित्व के इन शुरुआती दशकों के दौरान, एक अन्य फ्रांसीसी कैथोलिक विद्वान जो लैटिन के उपयोग में पारंगत था, ल्योन के गरीबों में शामिल हो गया, जिसने आंदोलन को बौद्धिक अखंडता और गहरी धार्मिक आधार प्रदान किया जिसकी उसे आवश्यकता थी।

एंटीहेरेसिस नामक दस्तावेज़, विधर्मी कैथर्स और उनकी मान्यताओं को संबोधित करने के लिए काम करता था। डूरंड ने कैथर्स की गलत मान्यताओं का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने और जनता को मंदर चर्च की ओर आकर्षित करने के लिए एक अत्यधिक विकसित धार्मिक रूपरेखा और निर्देशों का सेट प्रदान किया।

लिबर एन्टेहिरिसिस वाल्डेन्सियन आंदोलन में डूरंड का सबसे बड़ा योगदान था, जिसे रोमन कैथोलिक बिशपों ने कैथरिज्म के पाखंड के खिलाफ एक प्रभावी उपकरण के रूप में भी मान्यता दी थी। कैथरिज्म के पाखंड को संबोधित करने में वाल्डेन्सियन की प्रभावशीलता के कारण, कई बिशप वाल्डो के अनुयायियों की निंदा करने में धीमे थे, और यहां तक कि पोप द्वारा पाखंड की निंदा करने के बावजूद, कई बिशपों ने आंखें मूंद लीं, वे अपने कैथर विरोधी उपदेश से इतने संतुष्ट थे, जो प्रभावी था क्योंकि स्थानीय लोगों ने इसे सुना। इस प्रकार वाल्डो और उसके दोस्तों को लोगों का समर्थन प्राप्त था और क्षेत्रीय कैथोलिक पदानुक्रम द्वारा अपेक्षाकृत अच्छी तरह से माना जाता था।

उनके साथ एकमात्र विवाद प्रचार के वाल्डेन्सियन अभ्यास में आया। कैथरिज्म के तेजी से बढ़ते प्रभाव के साथ, एक ऐसे क्षेत्र में जो पहले लगभग पूरी तरह से रोमन कैथोलिक था, पोप ने कैथर आंदोलन के खिलाफ धर्मयुद्ध की घोषणा करके विधर्म के खिलाफ पूरी तरह से जवाब दिया।

धर्मयुद्ध एक युद्ध है जिसे केवल पोप द्वारा काफिरों के हमले के खिलाफ ईसाई दुनिया की रक्षा के लिए बुलाया जा सकता है।

धर्मयुद्ध को काफिरों द्वारा ली गई भूमि और संपत्ति को वापस पाने के लिए भी कहा जा सकता है और कैथोलिक विश्वासियों द्वारा निष्ठा दी जाती है जिन्हें क्रूसेडर कहा जाता है। एक पवित्र धर्मयुद्ध एक सैनिक था जो पोप द्वारा पहचाने गए दुश्मन के खिलाफ हथियार उठाता था, लेकिन निम्नलिखित तरीकों से भाड़े के सैनिकों और भर्ती किए गए सैनिकों से अलग था। धर्मयुद्ध की प्रेरणा पैसे या संपत्ति के भुगतान से नहीं थी; बल्कि, उसे एक भोग की पेशकश की गई थी जो आज तक किए गए उसके पापों की पूरी तरह से क्षमा प्रदान करती है, धर्मयुद्ध में एक सैनिक के रूप में उसकी कार्रवाई को उसकी तपस्या के रूप में गिना जाता है।

अंत में, धर्मयुद्ध करने वाला व्यक्ति ईश्वर से एक प्रतिज्ञा करता है, जो सार्वजनिक रूप से सैनिक को उसके विवेक के अनुसार, प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए बाध्य करता है। कैथर्स के विरुद्ध धर्मयुद्ध पश्चिमी यूरोपीय लोगों के विरुद्ध चर्च द्वारा पहला आह्वान था, जिन्होंने कैथोलिक ईसाई धर्म से नाता तोड़ लिया था। 1205 में, कैथर्स के विरुद्ध विनाश का पहला बड़ा कार्य लैंग्वेडोक में बेज़ियर्स के समुदाय में हुआ।

अपने बेलगाम जुनून और रोष में, धर्मयोद्धाओं ने बेज़ियर्स के पूरे समुदाय को अपने कब्जे में ले लिया। शहर पर उनके हमलावरों ने जल्द ही कब्जा कर लिया और नागरिक सुरक्षा के लिए कैथोलिक गिरजाघर की ओर भागे। चर्च और शहर दोनों को लूट लिया गया, सभी निवासियों का नरसंहार किया गया, चर्चों के अंदर मौलवियों, महिलाओं और बच्चों को मार दिया गया।

जब सेना के नेताओं ने शिविर के अनुयायियों से लूट का माल जब्त किया, तो शहर में गोलीबारी की गई और उसे जला दिया गया, और अभियान की शुरुआत में, धर्मयुद्ध के सैन्य कमांडर, अर्नोल्ड अमालरिक से कहा गया कि हमलावरों को विधर्मी और कैथोलिक के बीच कैसे अंतर करना चाहिए। कहा जाता है कि उन्होंने जवाब दिया था, उन सभी को मार डालो, भगवान अपने लोगों को जान लेंगे। नरसंहार के समय बेज़ियर्स में लगभग 10,000 लोग रहते थे, और बहुत कम लोग, यदि कोई हो, बच पाए।

फिर कभी किसी पूरे शहर के खिलाफ इस तरह का अंधाधुंध विनाश नहीं किया जाएगा, लेकिन कैथर समुदायों को कई अन्य कस्बों और शहरों में दबा दिया गया, जब तक कि वर्ष 1229 तक कैथर के खिलाफ धर्मयुद्ध धीरे-धीरे फीका पड़ने लगा। एक बार जब कैथर पाषंड को मजबूती से नियंत्रित कर लिया गया, तो पोपसी का गुस्सा 1230 के दशक की शुरुआत में वाल्डेन्सियन के खिलाफ पुनर्निर्देशित होने लगा। 1250 तक, पोपसी ने सभी जांचकर्ताओं द्वारा उपयोग के लिए संचालन की एक मानकीकृत और व्यवस्थित पुस्तिका बनाई और व्यापक रूप से वितरित की, क्योंकि उन्होंने पवित्र रोमन साम्राज्य में विधर्मियों पर मुकदमा चलाया और उन्हें दोषी ठहराया।

संक्षेप में कहें तो, पहले कैथर्स और बाद में वाल्डेन्सियन ने ईश्वर और मानवता के बीच आध्यात्मिक संबंध के अर्थ और समझ की मध्यम वर्ग की खोज को संबोधित करके एक मान्यता प्राप्त शून्य को भरने की कोशिश की। दोनों आंदोलनों ने गरीबी की शपथ ली थी और स्थानीय

भाषा में उपदेश देना शुरू किया था। कैथर्स की मान्यताएँ रोमन कैथोलिक चर्च की मान्यताओं के विपरीत थीं। हालाँकि, लोगों की भाषा में ईश्वर के वचन का प्रचार करने की वाल्डेन्सियन प्रथा चर्च के लिए बहुत बड़ा खतरा साबित हुई।

कैथर्स को उनकी द्वैतवादी सोच के कारण खारिज करना और विधर्मी करार देना अपेक्षाकृत आसान था। वे, आरंभिक चर्च के मनिचैइस्ट की तरह, मानते थे कि पुराने नियम का ईश्वर नए नियम का ईश्वर नहीं था और यीशु पूरी तरह से मनुष्य नहीं थे क्योंकि ईश्वर पीड़ा नहीं सह सकता था। आज उस सोच को मुख्यधारा के ईसाइयों के लिए विधर्मी के रूप में खारिज करना आसान हो सकता है, लेकिन यह ईसाई धर्म की बहुत नियंत्रित समझ का एक आकर्षक विकल्प था जो एक समझ से बाहर की भाषा में छिपा हुआ था और जिसकी मान्यताओं को कभी भी अधिकांश लोगों को प्रभावी ढंग से नहीं सिखाया गया था।

रोमन कैथोलिक चर्च को कैथर आंदोलन से खतरा था क्योंकि यह एक सदी पुराना था, लेकिन कैथोलिक चर्च के लिए सबसे बड़ा खतरा एक ऐसे समूह से उभर कर आया जो अपनी मान्यताओं में काफी हद तक कैथोलिक था लेकिन जिसने लोगों को समझने लायक भाषा में ईश्वर के वचन को फैलाने के लिए जोड़े में विनम्र और गरीब मिशनरियों को भेजने की हिम्मत की। यह प्रभु का वचन है। ईश्वर का धन्यवाद।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 5 है, कैथारिज्म के पाषंड को संबोधित करना।